कलीसिया अध्याय 15

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए ***प्रार्थना*** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **गलातियों 5-6 और इफिसियों 1**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (गलातियों 5-6 व इफिसियों 1) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह के लिए तैयारी]* **(3)1 थिस्लुनिकियों 4:3-5**

दो दो करके *पुनरावलोकन करें।*

(2) सयंमः 1 थिस्लुनिकियों 4:3-5। परमेश्वर की इच्छा यह है कि आप पवित्र बनें: कि आप यौन अनैतिकता से बचे रहें; कि आप में हर एक जन अपनी पत्नी के साथ उस तरह से व्यवहार करना सीखे जो पवित्र व सम्मानजनक हो, उन अन्यजातियों के समान नहीं को उनके साथ वासनापूर्ण व्यवहार करते हैं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसियाई संस्कार]* **प्रभु भोज**

परिचय. यह शिक्षा प्रभु भोज के सम्बन्ध में है। इस अध्याय में हम सीखेगें कि बाइबल प्रभु भोज,उसकी प्रथा, अर्थ व अभ्यास के बारे में क्या कहती है।

पढ़ें मत्ती 26:26-29; 1कुरिन्थियों 11:23-32।

क. प्रभु भोज की प्रथा

1. प्रभु भोज के बाइबल आधारित नाम।

बपतिस्मा और प्रभु मसीही जगत के दो संस्कार माने जाते हैं। *संस्कार* एक धार्मिक क्रिया है जिसे भीतरी या आत्मिक परिवर्तन या आशीष के प्रत्यक्ष चिन्ह के रूप में देखा जाता है।

परिचय। 1 कुरिन्थियों 11:20 में पायी जाने वाले इस संस्कार या प्रथा को प्रभु भोज के नाम से जाना जाता है। यह इसे प्रीति भोज से प्रभेद करने के लिए था जिसे कुरिन्थियों के लोग प्रभु भोज के साथ साथ आयोजित करते थे। दुर्भायवश यह प्रभु भोज भ्रष्ट रूप धारण करके मात्र भोजन समारोह बनकर रह गया जिसमें अमीर लोगों गरीबों के साथ बहुत कंजूसी से बर्ताव करने लगे।

1कुरिन्थियों 10:21 में इस संस्कार को प्रभु की मेज़ के नाम से जाना जाता है। यह नाम उसे शैतान की मेज़ से अलग दिखाने के लिए रखा गया था। कुरिन्थ में अन्यजातियां अपने देवताओं के लिए बलि चढ़ाने के लिए मन्दिर में लाया करते थे और बाद में वहीं बैठकर एक साथ बलिदान के भोज का आनन्द उठाया करते थे। एक भोजन को पॉलुस "शैतान की मेज़" करके सम्बोधित करता है, क्योंकि इन मूर्तियों को चढ़ाया जाने वाला बलिदान वास्तव में दुष्टआत्माओं को चढ़ाया जाता है। इस सन्दर्भ में बलिदान का भोज का अर्थ दुष्टात्माओं के साथ सहभागिता करना है।

प्रेरितों 2:42 और 20:7 में इस संस्कार को रोटी का तोड़ा जाना कहा गया है, यह अभिव्यक्ति वास्तव में प्रीति भोज के लिए इस्तेमाल की जाती है जिसमें प्रभु भोज भी शामिल है।

1 कुरिन्थियों 10:16 में इस संस्कार को परमप्रसाद के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ धन्यवाद देना होता है।

2.मसीह द्वारा प्रभु भोज की संस्थापना।

यीशु ने ही फसह के पर्व के दौरान प्रभु भोज के संस्कार की शुरूआत की थी। मैनुएल 6, परिशिष्ठ 5 को देखें। हमें इसके बारे में पहले तीन सुसमाचारों में पढ़ते हैं, उदाहरण के तौर पर मत्ती 26:26-29 तक, 1कुरिन्थियों 11:23-29। फसह के पर्व के दौरान1 बृस्पतिवार की शाम को, अर्थात निसान माह के पन्द्रहवें दिन उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले, यीशु ने रोटी ली, उस पर आशीष बोली और रोटी को तोड़ा, और यह कहते हुए अपने चेलों को दी," इसे लो और खाओ, क्योंकि यह मेरा बदन है"। फिर उस ने कटोरा लेकर,धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा,तुम सब इस में से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।" फसह के पर्व के दौराने ही अर्थात निसान के महीने में पन्द्रहवें दिन जो शुक्रवार था सुबह यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया गया था।

3. यूहन्ना 6:54-55 की व्याख्या।

यूहन्ना 6:54-55 में यीशु ने कहा,"जो मेरा मांस खाता और लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है, और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है।"यूहन्ना 6:48-59 प्रभु भोज के बारे में नहीं बताता है, परन्तु यह पहली बार प्रतीकात्मक तौर पर यीशु मसीह की आज्ञा पालन के लिए कहता है! पद 50 और 53 में क्रिया "खाने" (ग्रीक: ऐस्थीओ, इफागॉन) और "पीने"(ग्रीक : पीनो) का काल सामान्य भूतकाल है जो किसी भी मसीही द्वारा जीवन काल में एक बार मसीह को स्वीकार करने की ओर संकेत करता है। पद 54 से 56 में "खाने की" (ग्रीक:ट्रोगों)"पीने की "(ग्रीक: पीनो) के लिए क्रिया के लिए जिस काल का इस्तेमाल किया गया है वह वर्तमान नियमित काल है जो मसीह तथा *विश्वास* के रिश्ते में बने रहने के बारे में बताता है(यूहन्ना 6:40)। यीशु ने स्वयं 40,47 ओर 54 आयत में कही गयी बात का मतलब समझाया," जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं (मसीह) उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।" यीशु मसीह यहां पर कोई तत्व परिवर्तन की शिक्षा नहीं दे रहे हैं, खास तौर पर : कि रोटी और दाखरस जादूई तरीके से देह ओर मसीह का लहू बन जाएंगे।[2] वह सिखाता है कि *रोटी खाना और दाखरस पीना,* मसीह पर अपने जीवन और अपने हृदय में *विश्वास करने तथा स्वीकार* करने का शाब्दिक प्रतीक है। इस सन्दर्भ में , यीशु गैर विश्वासियों से उस में विश्वास करने के बारे में बोल रहे थे,(यूहन्ना 6:41-42)वह विश्वासियों से प्रभु भोज के बारे में नहीं बोल रहे थे।

तत्व परिवर्तन का सिद्धान्त जिसके अनुसार रोटी और दाखरस वास्तव में यीशु की देह और यीशु के लहू में परिवर्तित हो जाता है, बाइबल आधारित सिद्धान्त नहीं है।

यीशु मसीह की देह,प्रभु भोज के समय या धरती पर और किसी स्थान में किसी रहस्यमय ढंग से प्रगट नहीं होती। यीशु मसीह अपनी महिमित देह के साथ, स्वर्ग में उठा लिये गये और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर जा बैठे(प्रेरितों 1:9-11)! अत: स्वर्ग में उठा ली गयी यीशु की उस महीमित देह के साथ कोई इस धरती पर कुछ नहीं कर सकता।

4. प्रभु भोज को किस प्रकार मनाया जाना चाहिए।

प्रेरित पौलुस प्रभु भोज के मनाये जाने के विषय में पाँच महत्वपूर्ण बातों को बताते हैं।

(1) प्रभु भोज एक आज्ञा है।

प्रभु भोज एक *आज्ञा* थी जो पौलुस ने प्रभु यीशु से प्राप्त की थी और इस आज्ञा को बाकि मसीहियों तक आगे बढ़ाना चाहिए। मसीहियों को प्रभु भोज की रीति को मानना चाहिए।

(2) प्रभु भोज एक आशीष और धन्यवाद देने का अवसर है।

जबकि मत्ती यीशु मसीह द्वारा रोटी को *आशीष देने* के बारे में बताता है,पौलुस रोटी के लिए "*आभार व्यक्त करने*" के बारे में बताता है। "आशीषित करने" का अर्थ परमेश्वर के सामर्थी अनुग्रह को बरसाने की मांग करना तथा "अभारी" का अर्थ परमेश्वर द्वारा किये गये अनुग्रह को स्वीकार करके उसका धन्यवाद करना है। सारी बातों में इन दो शब्दों का बहुतायत से इस्तेमाल किया गया है और ये शब्द आशीष व आभार को व्यक्त करते हैं।

(3) प्रभु भोज एक स्मरण समारोह है।

प्रभु यीशु ने मसीहियों को सिखाया कि वे उसकी *याद में* प्रभु भोज को मनाया करें।

(4) प्रभु भोज एक उदघोषणा है।

जब कभी मसीही प्रभु भोज में सहभागी होते हैं वे प्रभु की मृत्यु की उसके दूसरे आगमन तक *घोषणा* करते हैं।

(5) प्रभु भोज एक पवित्र व गंभीर संस्कार है।

प्रभु भोज को पूरे कायदे व गंभीरता के साथ मनाया जाना चाहिए। इसलिए हर एक मसीही जन को प्रभु भोज में सहभागिता करने से पहले अपने आप को *जांच परख* लेना बहुत ज़रूरी है। मसीही जन मसीह की देह को *स्वीकार करने और समझने* में सक्षम होना चाहिए, अर्थात उसे यह पता होना चाहिए कि वह प्रभु भोज में क्या कर रहा है। यदि ऐसा नहीं होता है जो उसके प्रभु भोज में सहभागी होने से वह अपने ऊपर दण्ड लाता है।

ख. प्रभु भोज का अर्थ

परिचय: प्रभु भोज यीशु मसीह द्वारा मसीहियों को दिया गया एक चिन्ह और प्रमाण है। प्रभु भोज में सहभागिता करना वास्तव में मसीह के साथ सहभागिता करना है(1 कुरिन्थियों 10:16)।

पढ़ें मत्ती 26:26-30; 1 कुरिन्थियों 11:23-26।

1. प्रभु भोज एक चिन्ह है।

जिस प्रकार से पुराने नियम में खतना, हृदय के खतने का(रोमियों 2:28-29) एक *सांकेतिक चिन्ह व प्रमाण* था(रोमियों 4:11), पानी का बपतिस्मा, पवित्र आत्मा में बपतिस्मा का चिन्ह व प्रमाण था (प्रेरितों 10:47-48),ठीक उसी प्रकार से प्रभु भोज भी मसीह की मृत्यु और उसके द्वारा विश्वासियों को होने वाले फायदे (पापों का प्रायश्चित तथा पापों के विरूद्ध परमेश्वर के क्रोध से छुटकारा)(मत्ती 26:28)।

(1) एक चिन्ह वास्तव में अपने भीतर आत्मिक अर्थ लिए हुए एक प्रत्यक्ष प्रतीक होता है।

किसी भी संस्कार की विशेषता यह होती है कि वह प्रत्यक्ष में एक या अधिक आत्मिक सत्यों को निश्चय ही प्रगट करता है।

(2) प्रभु भोज में प्रतीक ।

प्रभु भोज में रोटी और दाखरस दो प्रत्यक्ष प्रतीकात्मक तत्व हैं, अर्थात रोटी का तोड़ा जाना और दाखरस का उण्डेला जाना, रोटी का खाया जाना और दाखरस का पिया जाना, और यह सब काम दूसरे मसीहियों के साथ संगति(प्रभु भोज) में किया जाता है।

इन प्रत्यक्ष प्रतीकों या चिन्हों में छुपे आत्मिक सत्य निम्नलिखित हैं:

- *रोटी और दाखरस* यीशु की देह और उसके लहू का प्रतीक हैं।
- रोटी का *तोड़ना* यीशु की देह की तस्वीर को प्रगट करता है, जिसे क्रूस पर तोड़ा गया था। दाखरस का *उण्डेला जाना* यीशु के लहू को दर्शाता है, जो उसके क्रूस पर ठोंके जाने पर बहा था। ये हमारे पापों के लिए प्रायश्चित के रूप में यीशु मसीह की मृत्यु तथा पाप के दण्ड से छुटकारे का *प्रतीक* है ।
- यीशु के वचन जिनके द्वारा प्रभु भोज की उत्पत्ति हुई सिखाता है कि उसकी मृत्यु एक *प्रतिस्थापन* थी। जब यीशु कहते हैं कि, "यह मेरी देह है जो *तुम्हारे लिए* है"(1कुरिन्थियों 11:24) और "यह *वाचा* का मेरा लहू है , जो *बहुतों के लिए* पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है"(मत्ती 26:28), वह हमें सिखाता है कि उसकी मृत्यु *लोगों के पापों के* प्रायश्चित के रूप में बलिदान है।
- रोटी का *खाना* और दाखरस का *पीना* दर्शाता है कि मसीही वास्तव में मसीह में सहभागिता कर रहा है और वह उन सारे लाभों को प्राप्त कर रहा है जो यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा उसके लिए सुरक्षित कर दिये हैं। जिस प्रकार से सामान्य रोटी को खाने और दाखरस को पीने के द्वारा हमारे शरीर का पोषण होता है उसी प्रकार से प्रभु भोज में शरीक होने से आत्मिक जीवन मज़बूत बना रहता व उसका नवीनीकरण होता है।
- मसीहीयों द्वारा *एक साथ* मिलकर प्रभु भोज *मनाना* विश्वासियों की *एक दूसरे* के साथ एकता को प्रगट करता हे।
- 1 कुरिन्थियों 10:17 बताता है कि *ब्रेड या रोटी के टुकड़ों* में सहभागिता करना इस बात को दर्शाता है कि हम मसीह की देह अर्थात विश्वाव्यापी कलीसिया के एक सदस्य हैं।

2. प्रभु भोज एक प्रमाण या मुहर है।

(1) मुहर एक बाहरी तौर पर प्रत्यक्ष चिन्ह है जो आत्मिक सच्चाई की वास्तविकता व निश्चय को प्रमाणित करता है।

प्रभु भोज का रीति या सस्कार केवल यीशु मसीह की मृत्यु का ही चिन्ह नहीं है वरन यह यीशु मसीह की मृत्यु के लाभों के प्रति भी सुनिश्चित करता है।

(2) प्रभु भोज की प्रमाणिकता (जामिन होना)।

प्रभु भोज मसीहियों को सुनिश्चित करता है कि वह मसीह के प्रेम का व्यक्तिगत प्रमाण है। प्रभु भोज मसीहियों से प्रतिज्ञा करता है कि उसके पास मसीह के मृत्यु द्वारा होने वाले सारे फायदों जैसे कि, उसके पापों से क्षमा, उसके पापों के दण्ड से मिला छुटकार व शुद्ध विवेक को हासिल करने का पूरा अधिकार है। प्रभु भोज मसीही जन को निश्चय दिलाता है कि उद्धार की आशीषें ही उसकी अनन्त सम्पत्ति है। (इफिसियों 1:3-5)।

पानी से बपतिस्मा मसीह को दूसरों से ***पृथक या अलग करने वाला चिन्ह*** है।

ठीक उसी प्रकार से प्रभु भोज भी मसीहियों के लिए ***एक अलग प्रकार का जश्न*** है।

हर बार जब कोई मसीह रोटी में से खाता और दाखरस में से पीता है तो वह यीशु मसीह के अपने उद्धारकर्ता होने और राजा के रूप में यीशु मसीह के प्रति अपनी निष्ठा की पुन: उदघोषणा करता है।

अत:, वह इस अवसर पर यीशु मसीह व उसके वचनों का पालन करने की प्रतिज्ञा करता है। हर बार जब कोई मसीही जन प्रभु भोज में भागी होता है, वह सुसमाचार की *उदघोषणा* करता है कि यीशु मसीह मानव जाति के पापों के मरा और जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह कभी नाश नहीं होगा वरन अनन्त जीवन पाएगा(जिसमें क्षमा भी शामिल है)।

3. प्रभु भोज अनुग्रह प्रदर्शित करने का एक माध्यम है।

(1) परमेश्वर के अनुग्रह के काम का प्रारम्भ। परमेश्वर प्रभु भोज के माध्यम से पापियों के हृदय में अनुग्रह करने की शुरूआत नहीं करते । परमेश्वर अद्भुत तरीके से *समय से पहले* ही पापियों को चुनने के द्वारा व *समय आने पर* सुसमाचार के द्वारा उन्हें बुलाये जाने के द्वारा, पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हें पवित्र व नया करने करके, तथा सत्य पर विश्वास करने के द्वारा उन्हें धर्मी ठहराने के द्वारा(यूहन्ना 3:3-8; 2थिस्लुनिकियों 2:13-14) उनके हृदय में अनुग्रह के काम की शुरूआत कर देते हैं (इफिसियों 1:4)।

(2) परमेश्वर के अनुग्रह की नियमितता।

परमेश्वर अपने वचनों की उदघोषणा करने के बहुत से तरीकों,पानी के बपतिस्मे तथा प्रभु भोज के द्वारा मसीहियों के हृदय में अपने अनुग्रह के कामों को *करते रहते* हैं।

वह कटोरा " मसीह के वाचा के लहू को दर्शाता है, जो बहुतों के पापों की क्षमा के निमित्त बहाया गया है"(मत्ती 26:27-28;इफिसियों 1:7)। बिना लहू बहाए, पापों की क्षमा नहीं है"(लैव्यव्यवस्था 17:11; इब्रानियों 9:22)। बिना लहू के कोई वाचा स्थापित नहीं हो सकती अर्थात परमेश्वर और मनुष्य के बीच कोई विशेष मित्रता नहीं हो सकती। परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने के लिए हमेशा एक बलिदान व उसके लहू की जरूरत होती है। क्योंकि मनुष्य स्वयं यह बलिदान लाने में असमर्थ है, इसलिए परमेश्वर चाहते हैं कि मनुष्य उस बलिदान को स्वीकार करे जो उसकी मांग पर मसीह यीशु में होकर हमारी ओर से प्रायश्चित के रूप में चढ़ाया गया है।

मसीह की प्रतिस्थापित मृत्यु के द्वारा, एक नयी वाचा का जन्म हुआ। जिसे अनुग्रह की वाचा के नाम से जाना जाता है और जिसका परिणाम पापों की क्षमा(धर्मी ठहराया जाना) और परमेश्वर के क्रोध से छुटकारा पान(उद्धार) हुआ(रोमियों 5:9)। प्रभु भोज के द्वारा मनुष्य को व्यक्तिगत तौर पर अपने और विश्व व्यापी *कलीसिया के उद्धार के निश्चय* में दृढ़ता मिलती है।

फिर भी, अनुग्रह में मज़बूत होने का काम अपने आप से नहीं होता है। प्रभु भोज को जादुई छड़ नहीं है। प्रभु भोज के मतलब को समझना और उसके प्रति उचित व्यवहार करना बहुत महत्वपूर्ण है।

4. प्रभु भोज एक वास्तविक सहभागिता(संगति, प्रतिभागिता) है।

पढ़ें यूहन्ना 16:7,12-15; इफिसियों 1:13-14;2कुरिन्थियों 1:21-22;5:5।

खोजें व चर्चा करें। प्रभु भोज के दौरा मसीह को किस तरह से प्रस्तुत किया जाता है?

ध्यान दें:

(1) लहू यीशु मसीह के साथ जीवन साझा करने का प्रतीक या चिन्ह है।

पुराने नियम के प्रकाशन में बहाया गया "लहू" जीवन का प्रतीक था, लेकिन उसे साझा नहीं किया जा सकता था (अर्थात खाना मना था)। लैव्यव्यवस्था 17:10-11 में परमेश्वर ने मूसा से कहा,"जो किसी प्रकार का लहू खाए, मैं उस लहू खाने वाले के विमुख होकर उसको उसके लोगों के बीच में से नाशकर डालूंगा। क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसकों मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिए लिये दिया है, कि तुम्हारे प्राणों के लिए प्रायश्चित किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित होता है।

लेकिन नये नियम के प्रकाशन में "लहू"("जीवन" का प्रतीक) केवल क्रूस पर बहाया ही नहीं गया, वरन उसे प्रतीक मानकर प्रभु भोज के दौरान साझा भी किया गया (अर्थात खाया गया)। यूहन्ना 6:56 में यीशु ने कहा "जो कोई मेरी देह में से खाता और मेरे लहू में से पीता है, वह मुझ में बना रहता है" (यूहन्ना 15:5 भी देखें)। इसके अलावा मत्ती 26:27-28 में अन्तिम फसह के दिन उसने कहा," तुम सब (विश्वास करने वालों), इस में से पिओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है" ऐसा करने से अर्थात प्रतीकात्मक रूप में उसकी देह को खाने और उसके लहू को पीने से यीशु मसीह का वास्तविक जीवन विश्वासी के जीवन में प्रवेश कर जाता है। यीशु मसीह ने अपने चेलों से केवल दाखरस(यीशु के लहू के प्रतीक) उण्डेलने के लिए नहीं वरन उसे पीने के लिए भी कहा। यीशु चाहते थे कि प्रभु भोज पर न केवल उसकी मृत्यु को स्मरण किया जाए बल्कि लोग उसके उस जीवन के त्याग को महसूस कर सकें जो उनके लिए उण्डेल दिया गया है। विश्वासी उस पोषण के बिना जीवित नहीं रह सकते जो उसका अर्थात मसीह का जीवन मुहैय्या कराता है। क्रूस पर बहाया गया यीशु का *लहू* (जिसके तरत उसने अपने प्राणों की आहूति दे दी) प्रायश्चित व पापों को दूर करने से बढ़कर काम करता है। जब कोई विश्वासी पहली बार यीशु मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करता है तो वह उसके साथ ऐसे रिश्ते की शुरूआत करता है जो कभी खत्म नहीं होता। इस रिश्ते में विश्वासी जन यीशु मसीह के जीवन में सहभागी हो जाता है: अर्थात उसके पुनरूत्थित जीवन(रोमियों 6:4-5) और उसके ईश्वरीय जीवन में(2 पतरस 1:3-4)।

"वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लहू की *सहभागिता* नहीं ?वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?"(1कुरिन्थियों 10:16)। लहू, अर्थात यीशु का जीवन जिसे प्रभु भोज के दौरान पिया जाता है विश्वासियों का आत्मिक तौर(विवेकी तथा भावनात्मक तौर पर) पर पोषण करता है। "क्योंकि मेरी देह वास्तव में खाने की और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है"(यूहन्ना 6:55)।

यीशु स्वयं इस बात का वर्णन करते हैं। यीशु में विश्वास करने वालों को वर्तमान में नया जीवन और मृतकों के जीवन उठने पर सिद्ध जीवन *प्राप्त होता* है। (यूहन्ना 3:16; यूहन्ना 5524; यूहन्ना 10:28): जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्त जीवन पाएगा और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा(यूहन्ना 6:40)! हमारा जीवन यीशु की प्रतीकात्मक देह को खाने और उसका लहू पीने से *वास्तव में सामर्थ* पाता है: "धन्यवाद का कटोरा...यीशु के लहू में और रोटी तोड़ना और खाना उसकी देह में सहभागिता करना है।" प्रभु भोज मसीह की देह अर्थात (कलीसिया) के साथ साथ विश्वासियों को सशक्त बनाता है(1कुरिन्थियों 10:16-17)!

प्रभु भोज के दौरान खाये जाने और पिये जाने वाले प्रतीक का अर्थ रोटी और दाखरस के साथ संगति (कोईनोनिया, संगति, सहभागिता)करना नहीं, वरन स्वयं यीशु के साथ *वास्तव में संगति* (कोईनोनिया, संगति, सहभागिता)करना है जो विद्यमान व उपस्थित है! प्रभु भोज के दौरान वह विश्वासियों के साथ अपना जीवन साझा करना जारी रखता है! जब कोई विश्वासी पहली बार यीशु मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करता है, तो उसी समय से ही वह स्वयं यीशु मसीह के आत्मिक व अनन्त जीवन का भागीदार बन जाता है। प्रभु भोज के दौरान यीशु मसीह विश्वासियों को अपनी धार्मिकता, उसकी पवित्रता, उसकी बुद्धि और उसका सिद्ध छुटकारा प्रदान करते हैं(1 कुरिन्थियों 1:30)! इस सत्य का अभ्यास नियमित तौर पर या साप्ताहिक तौर पर किया जाना चाहिए।

(2) यीशु की देह मसीह स्वर्ग में है।

यीशु मसीह अपनी देह (अब रूपान्तरित देह)के साथ स्वर्ग में है(यूहन्ना 16:7; प्रेरितों 1:9-11)।

(3) उसके मानवीय स्वभाव में छुटकारे के निमित्त पूरे किये गये कामों के सदगुण व प्रभाव, धरती पर विद्यमान हैं।

फिर भी क्या यीशु मसीह अपने आलौकिक स्वभाव में पवित्र आत्मा में और पवित्र आत्मा द्वारा वर्तमान काल में धरती पर विद्यमान हैं? "देखों मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे साथ हूँ"(मत्ती 28:20; यूहन्ना 14:16-18)। पवित्र आत्मा मसीहियों को सत्य के प्रति निरूत्तर करता और कलीसिया में मसीह को महिमा देता है(यूहन्ना 16:13-15)-यही काम प्रभु भोज के दौरान भी होते हैं। पवित्र आत्मा मसीहियों की मीरास का जामिन है(इफिसियों 1:13-14)। पवित्र आत्मा हम पर परमेश्वर के स्वामित्व की मुहर है। पवित्र आत्मा,यीशु मसीह की ओर से इस बात का भी जमानती है कि यीशु ने जो काम उसने हमारे जीवन में शुरू किया है वह खत्म भी करेगा।(2 कुरिन्थियों 1:21-22; 2 कुरिन्थियों 5:5;फिलिप्पियों 1:6)।

जहां कहीं भी प्रभु भोज लिया जाता है वहां यीशु उपस्थित होते तथा मसीहियों के जीवन लगातार आत्मिक कार्य करते रहते हैं। प्रभु भोज की रीति, मसीहियों को यह सुनिश्चित करने के लिए प्रारम्भ की गयी है कि यीशु आज भी मसीहियों में जो काम उसने शुरू किये थे उन्हें पूरा कर रहा है(फिलिप्पियों 1:6)। पवित्र आत्मा के द्वारा,वह अपनी देह और लहू के बलिदान के *सदगुणों व प्रभावों* को प्रभु भोज में *वर्तमान वास्तविकता और आशीष* बना देता है और उसके द्वारा मसीहियों को इसके द्वारा सशक्त व प्रोत्साहित करता है। प्रभु भोज इस बात का *चिन्ह व मुहर* है कि *बीते दिनों* में मसीह द्वारा पूर्ण किये गये काम *अब वर्तमान* में मसीहियों के हैं! मसीही लोग इस का दावा कर सकते, लगातार इसे हासिल कर सकते और लगातार इसके द्वारा जीवन यापन कर सकते हैं। प्रभु भोज एक मसीही को इस बात का निश्चय दिलाता है कि उसके सारे पापों का प्रायश्चित हो चुका है और वह क्षमा पा चुका है। यह इस बात की जमानत देता है कि मसीही का छुटकारा हो चुका और वह हमेशा छुटकारा पाये हुए की दशा में ही रहेगा! मसीही लोग प्रभु भोज में इन सारे तथ्यों को आनन्द उठाते हैं। प्रभु भोज बीते दिनों में हुई प्रभु की मृत्यु का *स्मरणोत्सव* नहीं है, परन्तु यह वर्तमान काल व स्वर्ग दोनों ही स्थानों में मृतकों में से जी उठे मसीह के *साथ संगति* (कोईनोनिया, संगति, सहभागिता) करने का समय है। प्रभु भोज के दौरान मसीह अपनी आत्मा के द्वारा लोगों को चंगा करता है(1कुरिन्थियों 11:30)और नया बनाता तथा इस धरती पर विश्वासियों के आत्मिक, शारीरिक तथा भावनात्मक व बुद्धिजीवी जीवन को शक्ति देता तथा बनाये रखता है!

ग. प्रभु भोज का अभ्यास

1. वे लोग जो उचित रीति से प्रभु भोज में भाग ले सकते हैं।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 11:27-29

खोजें व चर्चा करें। प्रभु भोज में कौन भाग ले सकता है?

(1)केवल वे ही मसीही लोग जो कलीसिया को *मान्यता* देते हैं, प्रभु भोज में भागी हो सकते हैं।

इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि गैर मसीही लोग और सामान्य तौर नये मसीही प्रभु भोज में सहभागिता नहीं कर सकते, क्योंकि उन्हें अभी तक यह (समझ) नहीं आ पाया है कि प्रभु भोज में क्या हो रहा है। जो कोई अनुचित रीति से चलता है और सामान्य भोजन और प्रभु भोज के बीच अन्तर को नहीं पहिचान सकता वह प्रभु भोज में शामिल नहीं हो सकता।

(2) अपने आप को *जांचने* वाले मसीही ही प्रभु भोज में भाग ले सकता है।

इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि जिन लोगों ने अभी तक पश्चाताप नहीं किया है वे प्रभु भोज में भाग नहीं ले सकते। लेकिन जिन लोगों ने अंगीकार किया है कि वे यीशु के बिना भटके हुए हैं, जो उद्धार के निमित्त यीशु मसीह द्वारा सिद्ध किये गये कार्यों पर विश्वास करते हैं, और जिन्होंने अपने आप को परखकर गम्भीरता के साथ अपने पापों से पश्चाताप किया है वे प्रभु भोज में भाग ले सकते हैं। मसीही लोग जो विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह के लहू ने उनके सारे पापों को धो दिया है और वे विश्वास, धार्मिकता और पवित्रता में बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं, प्रभु भोज में भागी हो सकते हैं।

2. प्रभु भोज मनाने का तरीका

(1) मण्डली को कितनी बार प्रभु भोज मनाना चाहिए?

यीशु या प्रेरितों ने इस बारे में कोई विशेष आदेश नहीं दिया है। इसलिए, कुछ मण्डलियां हर सप्ताह प्रभु भोज को मनाते हैं। प्रभु भोज मसीह के साथ एक सच्ची सहभागिता है। बहुत सी मण्डलियां एक महिने में और कुछ तीन महीने में एक बार मनाते हैं।

(2) किस प्रकार की रोटी और दाखरस का इस्तेमाल करना चाहिए?

यीशु और प्रेरितों ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने नहीं बताया कि रोटी या दाखरस को किसे बनाना चाहिए(किसी अधिकारी को या किसी आम आदमी को)।इसलिए कई मण्डलियों में प्रभु भोज के लिए अखमीरी रोटी तो कहीं सामान्य रोटी का इस्तेमाल किया जाता है। कुछ मण्डलियों में सच में दाखरस का तो कहीं पर अंगूर के रस या किसी भी पेय जल का इस्तेमाल किया जाता है। रोटी व दाखरस को बनाया या खरीदा जा सकता है। हालांकि रोटी या दाखरस नहीं *वरन जिसके प्रतीक* के रूप में इनका इस्तेमाल होता है अर्थात देह व लहू ज्यादा महत्व रखते हैं।

(3) किसी प्रकार से एक रोटी और एक ही कटोरे से दाखरस को लोगों में बांटा जाना चाहिए?

यीशु और प्रेरितों ने कुछ नहीं कहा। इसलिए कुछ मण्डलियां रोटी के छोटे छोटे टुकड़े कर देते और दाखरस को छोटे छोटे प्यालों में करके बांट देते हैं। दूसरे लोग प्रभु भोज के दौरान रोटी में से अपने अपने हिस्से का टुकड़ा तोड़ लेते हैं और एक ही प्याले में से एक एक करके पी लेते हैं। महत्वपूर्ण यह नहीं है कि रोटी के कितने टुकड़े किये गये और दाखरस के लिए कितने प्यालों का इस्तेमाल किया गया लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि लोग प्रभु भोज के सही अर्थ को समझें और सही प्रवृति के साथ सहभागिता करें। उचित प्रवृति का अर्थ निश्चय ही मसीह के देह में दूसरे मसीहियों की आलोचना न करना है। मसीहियों को प्रेम में होकर आपस में एक दूसरे को स्वीकार करना चाहिए!

(4) प्रभु भोज को कौन संचालित कर सकता है?

यीशु और प्रेरितों ने कुछ नहीं कहा। इस कारण, कुछ मण्डलियां प्रत्येक परिपक्व मसीही(भाई या बहन को) सेवा निभाने के लिए इस्तेमाल करते हैं, जबकि ज़्यादातर मण्डलियां परम्परागत तौर पर प्रभु भोज के प्रशासनिक कार्य या संचालन के काम को प्राचीनों या पासबानों के हाथ में सौंप देते हैं। वे लोग विश्वास करते हैं कि वचन की शिक्षा देना और आनुष्ठानिक कामों का संचालन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

हालांकि, वचन की शिक्षा और आनुष्ठानिक कार्य किसी विशेष श्रेणी के मसीहियों के लिए आरक्षित नहीं किया गया है, उदारहण के लिए, पास्टर या किसी शिक्षक तक सीमित नहीं है(मत्ती 28:20; कुलुस्सियों 3:16)। फिर भी, झूठी शिक्षाओं और संस्कार या अनुष्ठान के शोषण को नियन्त्रित करने के लिए, यह सलाह दी जाती है कि प्रभु भोज अगुवों की निगरानी में ही दिया जाना चाहिए।

(5) प्रभु भोज के दौरान किसी प्रकार वेशभूषा, मुद्रा, संकेतों, वचनों का इस्तेमाल करना चाहिए?

यीशु और प्रेरितों ने कुछ नहीं कहा। कलीसियाएं प्रभु भिन्न भिन्न तरीकों से मनाते हैं। कुछ कलीसियाएं रोटी के लिए प्रार्थना करते हैं(अर्थात वे परमेश्वर की आशीष को रोटी व दाखरस पर *मांगते* हैं)। दूसरे परमेश्वर का धन्यवाद देते हैं(अर्थात, *खड़े होकर* परमेश्वर के अनुग्रह का सम्मान करते हैं)। प्रभु भोज लेते समय कुद कलीसियाओं में लोग बैठे रहते हैं, जबकि दूसरी कलीसियाओं में खड़े हो जाते या सामने आकर घुटने टेक देते हैं और कई कलीसियाओं में लोग संचालन करने वाले अगुवे के पास चले जाते हैं।

अधिकाशं मण्डलियों में मत्ती 26: 26-29 या 1 कुरिन्थियों 11:23-29 पढ़ा जाता और मण्डली के सामने प्रभु भोज का अर्थ बताया जाता है। वे मसीही विश्वासियों को अपने आप को परखने और परमेश्वर के सामने अपने पापों को अंगीकार करने का समय प्रदान करते हैं। उसके बाद वे मसीहियों को रोटी और दाखरस या अन्य प्रतीकात्मक वस्तुएं देते हुए यीशु या पौलुस द्वारा कहें गये वचनों को पढ़ते हैं: "रोटी मसीह की देह का (प्रतीक) है। इसे मसीह की याद में खाया करो। "कटोरा मसीह के लहू की नयी वाचा का (प्रतीक) है। इसी मसीह की याद में पिया करो" (1कुरिन्थियों 11:24-25)।

कुछ मसीही लोग जैसे ही उन्हें रोटी या कटोरा मिलता है वे तुरन्त उसे खा व पी लेते हैं, जबकि दूसरे लोग एक साथ मिलकर खाने और पीने के लिए दूसरों की प्रतीक्षा करते हैं। कुछ लोग भोजन के साथ ही साथ प्रभु भोज को भी बांट देते हैं।

अन्त में, व प्रार्थना या गीत गाकर मसीह में होकर मिलने वाली परमेश्वर की सारी आशीषों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देते हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]***
	परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना	

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]***
	अगले अध्याय के लिए	

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण। चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2. "प्रभु भोज" पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **इफिसियों 2-5** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. याद करें। नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(4) उचित समय: सभोपदेशक 8:5ख-6क।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. बाइबल अध्ययन। **यूहन्ना 6** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।